एम.ए ज्योतिरविज्ञान प्रश्नपत्र होरा ज्यातिष–प्रथम चतुर्थ ईकाइ

डॉ राजकुमार तिवारी एमएससी, एमए, पीएचडी,एलबी, बीएड

हे मैत्रेय! अब मैं आपके सामने कर्मभावफल को कहता हूँ, जिसको ब्रह्मा, गर्गादि महामुनियों ने कहा है। दशमेश बलयुक्त होकर अपने उच्च, अपने नवमांश अथवा अपनी राशि में स्थित हो तो जातक पितृसुखों से युक्त, यशस्वी, एवं शुभ कर्म करने वाला होता है ।

दशमेश बलहीन हो तो जातक कर्मरहित होता है। राहु यदि केन्द्र–त्रिकोण में स्थित हो तो वह ज्योतिष्टोम आदि यज्ञकारक होता है।

कर्मेश शुभग्रहों से युक्त हो और शुभ स्थान में गया हो तो जातक को राजा के दरबार से तथा व्यापार से सदा ही लाभ होता है। अन्यथा अर्थात् दशम पापग्रहु युक्त हो और लाभभाव में भी पापग्रह हो तो जातक को लाभ नहीं होता साभ ह ीवह जातक दुष्कर्म करने वाला एवं अपने परिजन से वैर करने वाला होता है। दशमेश राहू के साथ होकर अष्टम भाव में बैठा हो तो जातक कुकर्मकारक, व से स्वबान्ध द्वेष करने वाला और महामूर्ख होता है। कमेंश सप्तम भाव में स्थित हो तथा मंगल, शनि से युक्त हो और सप्तमेश भी पापग्रह से युक्त हो तो वह जातक कुकर्म करने अपना उदर–पोषण करने वाला होता है।

कर्मेंश अपने उच्चराशि में गुरू के साथ बैठे हों और भाग्येश कर्मस्थान में हो तो जातक मानी, धनी और प्रतापी होता है। लाभेश कर्मस्थान में हो और कर्मेष लग्नभाव में अथवा दोनों केन्द्रभाव में हों तो जातक सुखी जीवन–यापन करने वाला होता है। कर्मेश बलयुक्त होकर मीन राशि में गुरू के साथा स्थित हो तो जातक वस्त्र–आभूषणों से युक्त होता है, इसमें कोई संदेह नहीं हैं।

एकादश भाव में सूर्य हो और राहू, मंगल शनि से युक्त हो तो वह जातक कर्मनाशक होता है।

यदि बृहस्पति, शुक्र मीन राशि में हो, लग्नेश बलवान हो और चन्द्रमा कअपने उच्च में स्थित हो तो जातक ज्ञानी तथा धनवान होता है। कर्मेश लाभस्थान में हो,

लाभेश लग्न में हो,20 में शुक्र हो तो वह जातक रत्नों से पूर्ण होता है।क अपने उच्चस्थ होकर कर्मेश केन्द्र त्रिकोण में हो और गुरू से युक्त या दृष्ट हो तो वह जातक क्रियाशील होता है। कर्मेश लग्नेश के साथ होकर लग्न में हो और चन्द्रमा केन्द्र त्रिकोण में स्थित हो तो वह जातक सत्कार्य का सम्पादन करने वाला होता है।

नीचग्रह के साथ होकर शनि दशम भाव में हो और दशम भाव के नवमांश में पापग्रह हो तो जातक कर्महीन होता है। कर्मेश अष्टम भाव में स्थित हो, अष्टमेश दशम भाव में हो और उसमें पापग्रह हो तो जातक कुकर्म करने वाला होता है। कर्मेश अपने नीच राशि का हो और कर्मभाव में पापग्रह तथा दशम भाव से कर्मस्थान में भी पापग्रह हो तो वह वह जातक कर्मरहित होता है।

कर्मस्थान में चन्द्रमा हो और दशमेश कर्मस्थान से त्रिकोण में एर्व लग्नेश केन्द्र में स्थित हो तो वह जातक सुन्दर कीर्ति वाला होता है। लाभेश कर्मभाव में हो और कर्मेश बलयुक्त हो गुरू के द्वारा अवलोकित हो तो जातक सुकीर्ति वाला होता है। कर्मेश नवम भाव में हो और लग्नेश कर्मस्थान में हो तथा लग्न से पन्चम भाव में चन्द्रमा हो तो विख्यात सुकीर्ति वाला जातक होता है। हे द्विजवर! इस प्रकार मैंने संक्षेप से कर्मभावफल को कहा। इसी प्रकार लग्नेश और कर्मेश के सम्बन्ध से अन्य शुभाशुभ फलों का भी विचार करना चाहिए।

पराशर जी कहते हैं कि हे द्विजोत्तम! टब में एकादश भाव के फल को कहता हूँ, जिसके शुभ होने से जातक सदा–सर्वदा सुखी होता है। लाभेश लाभस्थान में हो या केन्द्र त्रिकोण में हो, अस्त होकर भी अपने उच्च राशि का हो तो अधिक लाभकारक होता है । लाभेश शुभ ग्रह के साथ तृतीय भाव में स्थित हो तो 36 वें वर्ष में उस जातक को 2 हजार निष्क प्राप्त करते हैं। लाभाधिपति केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह कि साथ हो तो वह जातक 40 वें वर्ष में 400 निष्क का लाभ प्राप्त करता है। एकादश में गुरू भाव में चन्द्र युत हों और भाग्यस्थान में शुक्र स्थित हो तो ऐसा जातक 6 हजार निष्क का अधिपाति होताव है।

ला–धान्य, रत्न–आभूषणादि से युक्त एवं सर्वमान्य होता है। लाभेश लग्न में हो, तो 33 वर्ष प्राप्त होते–होते जातक एक हजार सुवर्ण निष्क का स्वामी होता है। धनेश लाभस्थान में हो और लाभेश धनभाव में हो तो ऐसा जातक विवाह कि पश्चात्

बहुत भाग्ययुक्त होता है। भ्रातृस्थानाधिप लाभस्थान में हो और लाभेश भ्रातृस्थान भाव में बैठा हो तो जातक को अपने बन्धुओं के द्वारा धन–आभूषणादि की प्रापित होती है।

लाभेश अपने नीच में हो या अस्त हो या त्रिक (6,7,12) स्थान में पापग्रहों के साथ हो तो बहुत यत्न करने पर भी जातक को लाभ नहीं हो पाता ।

द्वादशेश शुभ ग्रह से युक्त हो अथवा अपने राशि या अपनी उच्च राशि का हो और व्यय भाव में भी शुभ ग्रह बैठे हों तो शुभ कार्य में व्यय होता है। चन्द्रमा व्ययाधिपाति होकर नवम, एकाएश या पन्चम भाव में हो या अपने उच्च, स्वराशि या अपने नवमांश में हो या 5,9,11 भाव के नवमांश में हो तो ऐसा जातक सुन्दर भवन, शय्या एवं गन्धयुक्त वस्तुओं का भोग करने वाला होता है।

द्वादशेश अपनी शत्रुराशि में हो या स्वपनीच राशि के नवमांश में हो या अष्टमस्थ हो या रिपुभाव में हो या उसके नवमांश में हो तो जातक सुख से हीन एवं अधिक व्ययकारक होने के कारण दुःखी रहता है। व्ययेश केन्द्र त्रिकोण में हो तो जातक समुचित व्ययकारक सुख से युक्त रहता है। जिस प्रकार स्वलग्न के द्वादश भाव से अपना व्ययसम्बन्धी फल कहा गया है, उसी प्रकार भ्रातृ, मातृ, पुत्र आदि स्थानों के द्वादश भाव से भ्रातृ, मातृ, पुत्रादि का वययसम्बन्धी फल भी समझ लेना चाहिए।

पूवोंक्त जो शुभाशुभ फल कहा गया है, वह योगकारक ग्रह दृश्य चक्रार्ध में स्थित हो तो प्रत्यक्ष फलदायक होता है और यदि अदृश्य चक्रार्ध में बैठा हो तो वह परोक्ष रूप से फलप्रद होता है।

विशेष– लग्न के भोग्यांशदि से लेकर सप्तम भाव के भुक्त अंशादि तक अदृश्य चक्रार्ध कहा जाता है एवं सप्तम भाव के भोग्यांशदि से लेकर लग्न के भुक्तांश तक दृश्य चक्रार्ध कहा जाता है।

द्वादश भाव राहु, मंगल, सूर्य से युक्त हो अथवा सूर्य के साथ द्वादशेश हो तो वह जातक नरक में जाता है। व्ययभाव में शुभ ग्रह हो और द्वादशेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो एवं शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो वह जातक मोक्ष को प्राप्त होता है, इसिमें सन्देह नहीं है। व्ययेश पापग्रह से युक्त हो और व्ययभाव में पाप ग्रह

बैठा हो या पापग्रह सन्देह नहीं है। व्ययेश पापग्रह से युक्त हो व्ययभाव में पाप ग्रह बैठा हो या पापग्रह के द्वारा देखा जाता हो तो वह जातक देश–देशान्तर में विचरण करने वाला होता है। व्ययेश शुभ राशि में हो और व्ययभाव भी शुभ ग्रह की राशि हो या शुभग्रह के द्वारा युक्त या दृष्ट हो तो वह जातक अपने ही देश में भ्रमण करता है। व्ययभाव में शानि या भौम हो और शुभ ग्रह से न युक्त हो ही न ही दृष्ट हो तो वह जातक पापकर्म के माध्यम से धनोपार्जन करता है। लग्नेश व्ययराशि में हो, व्ययेश लग्न में हो और शुक्र से युक्त हो तो धार्मिक कार्य में जातक के धन का व्यय होता है।